विविध भारती के साठ वर्ष

सुरेश अवस्थी
808/12 कैलाश धाम
सेक्टर -50 नोएडा
(उत्तर प्रदेश) 201301
मो. 9871317860

विविध भारती ने 3 अक्टूबर 2017 को अपनी स्थापना के 60 वर्ष पूरे कर लिए। इन साठ वर्षों में विविध भारती की सबसे बड़ी उपलबधि यह रही है कि उसने हमारे जीवन को सुरीला बनाने में अहम भूमिका निभाई है।

किसी भी रेडियो चैनल ने अगर देश में साठ बरस से ज्यादा का सफर तय किया है तो यह प्रसारण इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। देश के इतिहास का साझीदार बनने के साथ ही ऐसे रेडियो चैनल को कदम दर कदम नई-नई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। इसकी वजह यह है कि आधी सदी से ज्यादा की अपनी सक्रियता के दौरान रेडियो चैनल अपनी संस्कृति गढ़ता है, अपने मुहावरे रचता है और बदलते वक्त, श्रोताओं और बाजार की जरुरतों के अनुसार स्वयं को भी ढालता जाता है।

3 अक्टूबर 2017 को साठ वर्ष की परिपक्व आयु पूरी कर चुकी विविध भारती की स्थापना ऐसे समय में हुई थी जब भारत में मनोरंजन का फिल्मों के अलावा और कोई साधन नहीं था। भारतीय जनमानस अपने मनोरंजन के लिए श्रीलंका (तत्कालीन सीलोन) से प्रसारित रेडिया सीलोन पर ही मुख्यतः आश्रित था। रेडियो सीलोन की विदेश सेवा से प्रसारित भारतीय फिल्मों के गीत संगीत ने भारत के श्रोताओं को अपने मोहपाश में जकड़ रखा था। रेडियो सीलोन से प्रसारित होने वाले पुरानी फिल्मों के गीत, आप ही के गीत और बिनाका गीतमाला पूरे भारत में बड़े प्यार और चाव से सुने जाते थे। ज्ञातव्य है कि प्रसिद्ध अभिनेता और फिल्मकार स्वर्गीय सुनील दत्त फिल्मों में आने से पहले बलराज दत्त के नाम से रेडियो सीलोन से उद्घोषणा किया करते थे। उनके अलावा अमीन सयानी तो बिनाका गीत माला के जरिये आज एक जीवित किवदंती बन चुके हैं। आज भी अनेक उदीयमान उद्घोषक उनकी शैली की नकल करने का प्रयास करते देखे जाते हैं।

> “
> यह फिल्मी संगीत का वह दौर था, जब अनेक प्रतिभाशाली संगीतकार, गीतकार और गायक–गायिकाएं भारतीय सिने संसार में सक्रिय योगदान दे रहे थे। पचास के दशक से भारतीय फिल्म संगीत के स्वर्णयुग की शुरूआत होती है, जो करीब तीन दशकों तक छाई रही। उस दौर के रुमानी और प्यार मोहब्बत का इजहार करने वाले गीत आज भी इतने लोकप्रिय हैं, कि प्राय: सभी एफ एम चैनलों पर उनकी ही धूम मची रहती है। आज के प्रेमी और प्रेमिकाएं भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्राय: इन्हीं पुराने फिल्मी गीतों का सहारा लेते हैं।

यह फिल्मी संगीत का वह दौर था, जब अनेक प्रतिभाशाली संगीतकार, गीतकार और गायक-गायिकाएं भारतीय सिने संसार में सक्रिय योगदान दे रहे थे। पचास के दशक से भारतीय फिल्म संगीत के स्वर्णयुग की शुरुआत होती है, जो करीब तीन दशकों तक छाई रही। उस दौर के रुमानी और प्यार मोहब्बत का इजहार करने वाले गीत आज भी इतने लोकप्रिय हैं, कि प्रायः सभी एफ एम चैनलों पर उनकी ही धूम मची रहती है। आज के प्रेमी और प्रेमिकाएं भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रायः इन्हीं पुराने फिल्मी गीतों का सहारा लेते हैं।

विविध भारती का जब जन्म हुआ तब भारत में रेडियो प्रसारण की तकनीक अधिक उन्नत नहीं थी। आजकल तो स्टीरियो एफ एम प्रसारण तकनीक का प्रयोग होता है,